ww[redacted]

RNI No. 22628/74 ... 7.00011/2012-14

ओ३म्
कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब

साप्ताहिक
आर्य मर्यादा
आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब का प्रमुख साप्ताहिक पत्र

मूल्य : 2 रु.
वर्ष: 70 अंक: 19
सृष्टि संवत् 1960853114
11 अगस्त 2013
दयानन्दाब्द 189
वार्षिक : 100 रू.
आजीवन : 1000 रू.
दूरभाष : 2292926, 5062726

जालन्धर

वर्ष–70, अंक : 19, 8/11 अगस्त 2013 तदनुसार 27 श्रावण सम्वत् 2070 मूल्य 2 रु०, वार्षिक 100 रु० आजीवन 1000 रु०

मानव निर्माण और आर्य समाज

-ले० श्री सुरेश शास्त्री सभा कार्यालय जालन्धर

जब महर्षि दयानन्द जी महाराज ने विद्याध्ययन के अनन्तर भ्रमण करना प्रारम्भ किया तब वह इस निष्कर्ष पर पहुंचे कि मनुष्य भी अपने चरित्र से गिरता जा रहा है जब मनुष्य का ही यह हाल है तो उसके द्वारा निर्मित आर्य समाज का क्या हाल होगा। मनुष्य सोचने वाली शक्ति को कहते हैं परमात्मा ने मनुष्य को सोचने की शक्ति प्रदान की है तथा बुद्धि भी दी है। जब मानव का निर्माण नहीं होगा तो समाज का निर्माण कैसे होगा। जब समाज ही ठीक नहीं तो राष्ट्र का क्या होगा। यह विचार उनके मस्तिष्क में चक्कर लगाते रहे। उसका निरन्तर उपाय भी सोचते रहे, ग्रन्थ भी लिखे, व्याख्यान भी दिए। उन्होंने इन्हीं विचारों को अपने ग्रन्थों में भी लिखा। मनुष्य शब्द की परिभाषा करते हुए निरूक्त में लिखा है-

मनुष्यः कस्मात् मत्वा कर्माणि सीव्यति
मनस्य मानेन सृष्टा मनसः पुनर्मनस्वी भावे।
मनोरपत्यं मनुष्यो वा-

अर्थात् इनको मनुष्य इसलिए कहा जाता है, क्योंकि ये सोच विचार कर कर्मों को फैलाते हैं बिना विचारे अनेक कर्मों को नहीं बढ़ाते। मन तथा षिवु तन्तुसंताने इन दोनों धातुओं के योग से मनुष्य शब्द बनता है। मन और मनुष्य ये दोनों शब्द मननशील अर्थ में प्रयुक्त होते हैं। महर्षि दयानन्द जी मनुष्य का लक्षण सत्यार्थ प्रकाश में इस प्रकार करते हैं-

मनुष्य उसी को कहना कि मननशील होकर स्वात्मवत् अन्यों के सुख-दुःख और हानि-लाभ को समझे। अन्यायकारी बलवान् से भी न डरे और धर्मात्मा निर्बल से भी डरता रहे, इतना ही नहीं अपने सर्व सामर्थ्य से धर्मात्माओं की चाहे वे महा अनाथ निर्बल और गुणरहित क्यों न हो, उनकी रक्षा उन्नति प्रियाचरण सदा किया करें। अर्थात् जहां तक हो सके वहां तक अन्यायकारियों के बल की हानि और न्यायकारियों के बल की उन्नति सर्वथा किया करें। इस काम में चाहे उसको कितना ही दारूण दुख प्राप्त हो, प्राण भी चले जाएं। परन्तु इस मनुष्य रूपी धर्म से पृथक् न हो।

२. मनुष्य को सबसे यथायोग्य स्वात्मवत् सुख-दुःख, हानि-लाभ में वर्तना श्रेष्ठ अन्यथा वर्तना बुरा समझता हूं।

३. मनुष्य अर्थात् जो विचार के बिना किसी काम को न करे उसी का नाम मनुष्य है।

मनुष्य में कौन-कौन से गुण होने चाहिए, इस विषय में महात्मा विदुर जी लिखते हैं-

अष्टौ गुणाः पुरूषं दीपयन्ति प्रजा च कौल्यं च दम-श्रुतं च
पराक्रमश्चाबहुभाषिता च दान यथाशक्ति : कृतज्ञता च।।

अर्थात् आठ गुण मनुष्य को प्रकाशित करते हैं--१. बुद्धि, २. कुलीनता, ३. मन को रोकना, ४. शास्त्र ज्ञान, ५. पराक्रम, ६. थोड़ा बोलना, ७. यथाशक्ति दान, ८. किये हुए उपकार को मानना।

महर्षि दयानन्द जी सत्यार्थ प्रकाश के द्वितीय समुल्लास में मानव निर्माण के बारे में लिखते हैं-मातृमान् पितृमान् आचार्यवान् पुरूषो वेद यह शतपथ ब्राह्मण का वचन है। वस्तुतः जब तीन शिक्षक उत्तम होते हैं अर्थात् एक माता दूसरा पिता और तीसरा आचार्य होवे तभी मनुष्य ज्ञानवान होता है। वह कुल धन्य है वह सन्तान बड़ा भाग्यवान है जिसके माता पिता धार्मिक विद्वान हो। जितना माता से सन्तानों को उपदेश और उपकार पहुंचता है उतना किसी से नहीं। जैसे माता सन्तानों को चाहती उतना अन्य कोई नहीं। इसलिए प्रशस्ता धार्मिकी माता विद्यतेयस्य स : मातृमान्। धन्य वह माता है जो जब तक पूरी विद्या न हो सुशीलता का उपदेश करे। बालकों को माता सदा उत्तम शिक्षा करे। जिससे सन्तान सभ्य हो। किसी अंग से कुचेष्टाएं न करने पावें।

इस समुल्लास में महर्षि ने मानव निर्माण के सब पहलुओं पर प्रकाश डाला है। इससे बढ़कर मानव निर्माण के लिए और क्या होगा ? यदि इसके अनुसार माताएं बच्चों को शिक्षा दें तो संसार स्वर्ग बन सकता है। इस पर मानव मात्र को विशेष ध्यान देना चाहिए।

मनुष्य शब्द के कई पर्यायवाची शब्द हैं मनुष्य, पुरूष, नर इत्यादि सब के अर्थ भी अलग-अलग हैं। मानव का निर्माण किस प्रकार किया जावे। इस भावना से प्रेरित होकर महर्षि ने आर्य समाज की स्थापना की थी जिसका उद्देश्य ही मानव का निर्माण करना है। यह सब आर्य समाज के नियमों में निहित है। महर्षि दयानन्द जी ने सबसे उच्चतम ग्रन्थ वेदों को माना है और उसमें लिखा है कृण्वन्तो विश्वमार्यम् सारे संसार को आर्य बनाओ। प्राचीन संस्कृत साहित्य में आर्य शब्द कई अर्थों में मिलता है-पूज्य, श्रेष्ठ, धार्मिक, धर्मशील, मान्य, उदारचरित निरन्तर कर्त्तव्य कर्म करने वाला। विदुर नीति में भी आर्य का लक्षण इस प्रकार है-

जो शान्त हुए वैर को पुनः प्रज्वलित नहीं करता, जो अंहकार नहीं करता। मैं दुर्बल कमजोर हूं ऐसा सोचकर अकार्य नहीं करता उसको श्रेष्ठ आर्य शील श्रेष्ठों के शील स्वभाव वाला कहते हैं। जो अपने सुख में हर्षित नहीं होता और सबके दुखों में प्रसन्न नहीं होता। दान देकर पीछे पछतावा नहीं करता। वह सज्जन आर्यों के स्वभाव वाला है।

महर्षि दयानन्द भी आर्य का अर्थ करते हैं जो श्रेष्ठ स्वभाव वाला, धर्मात्मा, परोपकारी, सत्याविद्यादि गुणयुक्त है। इस प्रकार आर्य शब्द का अर्थ श्रेष्ठ, पूजनीय, धर्मात्मा, उदारचरित्त जिसके अन्दर संकीर्णता नहीं, परमात्मा में विश्वास रखने वाला, शान्त, जो न्याय मार्ग में चलने वाला, कर्त्तव्य कर्म करने वाला इत्यादि।

(शेष पृष्ठ 7 पर)

www.thearyasamaj.org

6, 9, 11

ले० अभिमन्यु खुल्लर-22 नगर निगम क्वार्टर्स, जीवाजीगंज, ग्वालियर

(गतांक से आगे)

24 घंटों का पूरा-पूरा समय विभाजन कर रखा था और उसका सख्ती से पालन करते थे-अन्यथा सोच विचार के लिये उनके पास समय ही नहीं था, यही तो उत्तर दिया था कलकत्ते के युवक को जिसने महर्षि से प्रश्न किया था कि कामवासना ने उन्हें कभी सताया अथवा नहीं।

महर्षि के जीवनीकार देवेन्द्रनाथ मुखोपाध्याय ने (पृष्ठ 570) एक घटना का उल्लेख किया है। एक दिन एक सेठजी आए उनका दसवर्षीय पुत्र भी उनके साथ था। वह अत्यन्त लज्जालु था। किसी प्रकार महाराज ने उसे अपने पास बुलाया और उसे कहा कि तुम नित्य सुबह उठकर और हाथ मुँह धोकर अपने माता-पिता को नमस्ते किया करो और पाठशाला जाते समय अपनी पुस्तकें स्वयं ले जाया करो, नौकर को मत ले जाने दो। **''यदि मार्ग में कोई स्त्री तुम्हें मिल जाए तो उसकी ओर दृष्टि जमा कर मत देखो, अपनी दृष्टि नीची कर लो नहीं तो उस स्त्री की आकृति तुम्हारे मन में घुसकर एक प्रकार की उष्णता उत्पन्न करेगी और तुम्हें धातुक्षीणता का रोग हो जाएगा जिससे तुम्हारा बहुत अनिष्ट होगा।''**

गौर फरमाईए महर्षि दयानंद ने यह उपदेश 'दस साल' के लड़के को दिया। यह मानना मुश्किल ही होगा कि इस आयु का बालक कामवासना का क,ख,ग भी जानता होगा। फिर भी महर्षि को चिन्ता थी कि स्त्री-पुरूष के नेत्रों के मिलने से कामवासना की छवि बालक के मन पर भी बैठ सकती है।

आज हम कहाँ है ? दिन रात सैक्स परोसा जा रहा है। पूरी बाहु के ब्लाउज और साड़ियों से ढकी तन वाली फिल्मी हीरोइनें अब दो चिन्दियों में आ गई है। टी.वी. चैनल्स पर भी यही सब कुछ देखने को मिल रहा है। इस पर तुर्रा यह कि आइटम साँग (item song) के नाम पर फिल्मों में वह सब कुछ परोसा जा रहा है जो वैश्यालयों में भी फिल्मों से ही पहुँचता है।

जब चौबीसों घण्टे, सिनेमा के पर्दे और टी०वी० पर यह परोसा जा रहा हो तो हम कैसे उम्मीद करें कि बच्चे गायत्री मंत्र का जाप करेंगे ?

अपवादों को छोड़कर हम सामान्य जन मांसभक्षी (नारी) हो गये हैं। नई पीढ़ी के युवक-युवतियों को; युवावस्था की दहलीज पर खड़े हुए बालक-बालिकाओं को इन्टरनेट के माध्यम से पूरा काम शास्त्र, देशी-विदेशी, मय रतिक्रियाओं के जीवित दृश्यों के साथ उपलब्ध है। अब मोबाईल पर भी इन्टरनेट उपलब्ध है। लुक-छुप कर, डर कर देखने की जरूरत नहीं है। कभी भी देखा जा सकता है।

कामवासना खुद आग है, उसमें घी डालने वाली एक दो बातों का उल्लेख और करूँगा। केन्द्रीय सरकार आन्दोलनों के आगे घुटने ठेक कर बलात्कार के विरूद्ध अध्यादेश लाई और फिर फटाफट संसद में कानून पारित करा दिया। न तो केन्द्र सरकार और न ही राज्यसरकारें ''नशाबन्दी'' के लिए सख्त कदम उठाने को तैयार हैं। कारण स्पष्ट है कि यही मद ऐसा है जिसमें अरबों रूपये की आय होती है और इस मद पर टैक्स बढ़ाने के विरूद्ध कभी कोई जन आन्दोलन नहीं होता। यही स्थिति धूम्रपान की भी है। शासन ने अपने उत्तरदायित्व की इति श्री वैधानिक चेतावनी-''धूम्रपान स्वास्थ्य के लिये हानिकारक है'', अंकित कराकर दे दी। रही भोजन की बात उत्तर भारत में कचौड़ी समोसे एवं अन्य गरिष्ठ भोजन की दुकानों की भरमार है। माँस मछली युक्त पकवान व फास्ट फूड जमकर उपलब्ध है और जमकर खाये जाते हैं। पढ़े लिखे युवा वर्ग में 'रेव पार्टियों' का प्रचलन तीव्रता से बढ़ा है और बढ़ रहा है। आज भी युवा पीढ़ी फिल्मी सितारों को अपना ICON आदर्श मानती है इसलिये बैगपाइपर शराब का विज्ञापन करते हैं अजय देवगन और कामोत्तेजक दवा रिवाइटल का सलमान खान। स्थानीय समाचारपत्रों में कामवृद्धि में सहायक तेल और अन्य दवाईयों के विज्ञापन भरे रहते हैं। रही ड्रग्स-नशीली दवाईयों की बात। उसका व्यापार अन्तर्राष्ट्रीय स्तर तक फैला है। खिलाड़ी भी इनका उपयोग करते हुए समाचारों में आये दिन उपलब्ध रहते है।

अब मैं उन समाचारों की ओर भी ध्यान आकर्षित करना चाहूँगा। जिन्होंने मेरी विचारतंत्री को जड़ से हिला दिया, और इस विषय पर लिखने को मजबूर किया।

1-टाइम्स ऑफ इण्डिया, दिल्ली 31-12-2012 तथा दैनिक भास्कर, ग्वालियर के 31-12-12 में समाचार प्रकाशित हुआ था कि महाराष्ट्र के थाने जिले के डॉम्बीविली नगर के पुत्र व पिता को 19 वर्षीय पुत्री के साथ लगातार दो वर्ष तक दुष्कर्म करने के कारण गिरफ्तार किया गया।

2-नई दुनियाँ, ग्वालियर 6 मार्च 2013-रात्रि में प्रसूति के लिये ले जाई जा रही 63 वर्षीय नर्स के साथ 4 लोगों ने बलात्कार किया।

3-नई दुनियाँ, ग्वालियर 7 मार्च 2013 नाबालिग से किया पाँच नाबालिग छात्रों ने दुष्कृत्य। छात्रा 13 वर्ष, दुष्कृत्य करने वाले छात्र 11 से 14 वर्ष।

4-15 वर्षीय किशोरी से एक साल तक दैहिक शोषण किया एक 23 वर्षीय युवक ने।

5-मध्यप्रदेश में 5 हजार लड़कियाँ गायब।

6-उत्तर भारत में सुरक्षित नहीं महिलायें।

7-7 मार्च 2013 को ही रात्रिकाकलीन 9:30 बजे के बुलेटिन में बताया गया कि दिल्ली में वर्ष 2012 में 206 रेप प्रकरण दर्ज हुए। पिछले 24 घण्टों में 8 रेप यानी प्रतिदिन 4 रेप का औसत दिल्ली का ही है और एक जनवरी से 15 फरवरी 2013 तक 81 प्रकरण दर्ज हुए।

8-4 अप्रैल 2013 को सभी चैनलों पर रात्रिकालीन न्यूज बुलेटिन में यह समाचार आया कि गुड़गाँव-हरियाणा का 45 वर्षीय करोड़पति ट्रांसपोर्टर पिछले तीन वर्ष से अपनी सोलह वर्षीय पुत्री के साथ यौनाचार करता रहा। विद्यालय की प्राचार्या को सुबकते हुए लड़की ने आप बीती सुनाई। प्राचार्या की शिकायत पर पुलिस ने जाँच पड़ताल की और पिता को गिरफ्तार किया।

देश की जनसंख्या 120 करोड़ से भी बढ़ गई है। सही आँकड़े प्रस्तुत करना मुश्किल है फिर भी 50-60 करोड़ के लगभग युवक युवतियाँ, नई सोच-कामवासना नियंत्रण (ब्रह्मचर्य-वीर्यरक्षा, सैक्स से परहेज) को एक टैब्बू-दकियानूसी विचार समझते हैं। सफलतापूर्वक सैक्सुअल लाइफ बिताई जा सकती है, यह कार्य व्यापार महानगरों में काफी लम्बे समय पूर्व से धड़ल्ले से चल रहा है। कन्डोम व पिल्स का प्रचलन वैवाहिकों से ज्यादा बिन ब्याहों में है। मध्यस्तरीय नगर भी इससे अछूते नहीं है। हमारे ग्वालियर में ही यूनिवर्सिटी के बाहर की चाय आदि की दुकानों के पिछवाड़े मौज-मस्ती करने के अड्डे बने हुए थे जिनका भंडाफोड़ कुछ वर्षों पूर्व हुआ था। अशिक्षित, अर्द्धशिक्षित, बहुत बड़ा वर्ग है जो रोजी रोटी की जुगाड़ में पूरी जिन्दगी खपा देता है। नैतिकता-अनैतिकता उन्हें स्पर्श भी नहीं कर पाती। उद्दाम कामवासना का नियंत्रण करना चाहिये, उनकी समझ से बाहर की बात है।

यह है समस्या की जमीनी हकीकत। इसके एकाध पक्ष की चर्चा यदा कदा होती रहती है। शरीर का कैन्सर व्यक्तिगत होता है-समाज का कैन्सर अत्याधिक विस्तृत 50-60 करोड़ में फैलता हुआ। बुरी तरह त्रसित समाज इससे मुक्ति के लिये फड़फड़ा रहा है। भारतीय समाज के उस वर्ग को जिसमें बुद्धजीवी, विद्वान व सन्यासी आते हैं, सोचना चाहिये कि इस क्षेत्र में उनका ही सर्वोपरी दायित्व है। उन्हें मार्गदर्शन करना है, संगठित कर जनजागरण के कार्यक्रम चलाना हैं। शिक्षा में नैतिक मूल्यों की शिक्षा का समावेश अनिवार्य रूप से होना चाहिये। हाईस्कूल की शिक्षा तक उन्हें बुराईयों, अपराधों के परिणामों के बारे में सजग करना चाहिये। मेरी समझ में अब तक ऐसी किसी पहल का श्रीगणेश भी नहीं हुआ है निकट भविष्य में संभावना कम ही दिखती है। जैसा चल रहा है, चलने दो। हमें क्या पड़ी? यही सोच आम आदमी की है और विद्वानों व सन्यासियों की भी।

www.thearyasamaj.org

सम्पादकीय.....

आने वाला है श्रावणी महापर्व

आर्यो हम सब जानते हैं कि किसी भी राष्ट्र को अवनत् करने वाले तीन शत्रु है 1. अज्ञान 2. अन्याय 3. अभाव। अगर राष्ट्र इन तीन शत्रुओं से घिरा हुआ हों तो वह कभी भी उन्नत नहीं हो सकता जब इन तीन शत्रुओं का राज्य बढ़ता जाएगा तो सर्वत्र अशान्ति फैल जाएगी और उस अशान्ति के वातावरण में रह पाना कठिन हो जाएगा और आजकल की इस परिस्थिति को देखकर तो ऐसा ही प्रतीत हो रहा है कि वह समय बहुत निकट आ चुका है। अभी हाल ही में हुए उत्तराखण्ड की त्रासदी इसका प्रथम उदाहरण है और दूसरी ओर चोरी चकारी व बड़ों का अनादर इसके अनेकों प्रमाण हमारे सामने धीरे-धीरे आ रहे हैं। प्रकृति के साधनों का दुरूपयोग जब-जब होगा प्रकृति में ऐसी हलचलें मचती रहेंगी। यह आज की शिक्षा पद्धति का ही नतीजा नजर आता है कि व्यक्ति केवल शिशनोदर प्राणी बन कर रह गया है केवल और केवल पैसा आना चाहिए वह कैसे भी प्राप्त हो। बन्धुओं धन के लिए मना कभी नहीं किया हमारे वेदों में परन्तु धन को कैसे कमाया जाए यह आचार संहिता अवश्य पुरुषार्थ चतुष्टय में दी है कि धर्म, अर्थ, काम, और मोक्ष विद्या तो वह होती है जो मनुष्य को मुक्त अवस्था की ओर ले जाती है। आज उसी विद्या का अभाव धीरे-धीरे हो रहा है जिसके कारण अज्ञान रूपी शत्रु हमारे देश को निगल जाने को तैयार बैठ है। उसी शत्रु को अगर हम मार दें तो पिछले दो शत्रु स्वतः ही समाप्त हो जाएंगे और यही पावन पर्व "श्रावणी उपाकर्म" हमें संदेश देने के लिए आ रहा है आया था और आता रहेगा और अपना संदेश देता रहेगा। अब मैं संक्षिप्त में आपका ध्यान पर्व परिचय की ओर दिलाना चाहूँगा जहां इसका सबसे सनातन परिचय मिलता है। प्रत्येक बन्धु इस पर विचार कर सकता है और यही परिचय हमारे जीवन को उन्नत बनाया करता था तभी तो हमारे देश को विश्व गुरु कहा जाता था। बन्धुओं हमारा देश वर्षा बहुल व कृषि प्रधान देश है यहाँ की जनता आषाढ व श्रावण मास में कृषि के कार्यों में विशेषतः व्यस्त रहती है और श्रावणी शस्य की बुआई जुताई आषाढ से प्रारम्भ होकर सावन के अन्त तक समाप्त हो जाती है ऐसे समय में ग्रामीण जनता कृषि कार्यों से निवृति पाकर तथा भावी फसल के आगमन पर आशान्वित होकर चित्त की शान्ति व अवकाश लाभ करती है और क्षत्रिय वर्ग भी दिग्विजय यात्रा से विरत हो जाता था, व्यापारी वर्ग भी वाणिज्य की यात्रा से विरत हो जाता था और उधर ऋषि मुनि महात्मा लोग भी वर्षा के कारण अरण्य स्थली को छोड़कर ग्रामों उद्यानों में आकर सभी वर्गों के लोगों को वेद विद्या के साथ, वेद पारायण वेदों के प्रवचन से समस्त जनता को सर्व प्रकार की सत्य विद्या का उपदेश देते थे और जनता उस उपदेश को सुन कर अपने अपने कार्यों को उन्नति के शिखर पर पहुँचाती थी अर्थात् वेदों के अनुसार ऋषि, युद्ध विद्या व्यापार व व्यवहार यह सब शिक्षा जो वेदों में है उसे ग्रहण करके उन्नत होकर पुरुषार्थ चतुष्टय को सिद्ध किया करते थे और शायद इस माह का नाम भी श्रवण के कारण अर्थात् श्रेष्ठ ज्ञान के सुनने के कारण ही श्रावण पड़ा हो और इसी महीने नहीं यह क्रम लगातार चतुर्मास तक चलता रहता था उसके बाद तर्पण हुआ करता था जब तक हमारे देश में पर्वों को मानने का यह तरीका था तो हमारा देश विश्व गुरु कहलाता था और विश्व विजेता सिकंन्दर का गुरु अपने शिष्य से कहता था, अगर भारत से लाकर मुझे कुछ देना चाहता है तो मुझे एक गुरु ला देना, राजा ने पूछा गुरु मिलेगा कहाँ तो राजा के गुरु का कहना था कि भारत के हर गली में गुरु ही गुरु है अर्थात् प्रत्येक भारतीय गुरु है कैसा युग रहा होगा आज विश्व गुरु भारत के हर गली कूचे में भ्रष्टाचार, पापाचार, अनाचार बढ़ता जा रहा है इसको कैसे समाप्त किया जाए तो इसका एक ही रास्ता है जो महर्षि दयानन्द सरस्वती जी ने बतलाया है कि "वेदों की ओर लौटो" जब तक भारत में वेदों का बोल बाला था यहां का राजा अश्वपति मुक्त कण्ठ से घोषणा करता है-

न मे स्तेनो जनपदे न कदर्यो न च मद्यपः
नानाहिताग्निर्नाऽविद्वान न स्वैरी स्वैरिणी कुतः।

यह वह समय था जब हम श्रावणी पर वेद पाठ का व्रत लेते थे और यज्ञोपवीत धारण करके विद्वान बनने का संकल्प लेकर ऋषि ऋण, पितृ ऋण, देव ऋण से उऋण होने का प्रयास करते थे सब कुछ आलस्य व प्रमाद ने अपने आगोश में ले लिया, आर्य शेर सो गए, और वेद का पाठ पढ़ाने वाला ब्राह्मण वेदाज्ञा को भूल गया और ब्राह्माण का जप तप त्याग और साधना से कोई सम्बन्ध न रहकर जन्म गत व वंशानुगत हो गया तो यह अन्याय भ्रष्टाचार बढ़ता गया और बढ़ता जाएगा क्योंकि यहां पर केवल पाप करने वालों को पाप से मुक्त कराने का लालच देकर दान-पुण्य से पापों का नाश कराने वाले पण्डित पुजारी भगवान श्री राम व भगवान श्री कृष्ण की बात को भी भुला कर कर्म फल के सिद्धान्त को जानकर भी अपनी धन पिपासा को ही शान्त करने के लिए लोगों से न जाने क्या-क्या उपाय बता कर धन ऐंठ कर अपना उल्लू सीधा कर रहे थे। ऐसे में हे आर्यों उस महर्षि दयानन्द जी की बात को आप तो सुनो उसकी बगिया में बैठ कर वेद कथा सपरिवार आप तो सुनो और अपने मित्रों को ऐसी सत्संग वाटिका में लेकर चलो जहाँ वेद की पावन ऋचाएं सुनने को मिलती है यही संदेश तो यह महान पर्व हमें देने वर्ष में एक बार आता है लेकिन एक बात का ध्यान और भी हमें रखना पड़ेगा अगर हम किसी व्यक्ति को सत्संग में सपरिवार ले जाना चाहते है तो पहले अपने परिवार को लेकर चलना पड़ेगा पड़ोसी खुद आपके साथ चलने को तैयार हो जाएगा महर्षि दयानन्द की लगाई वाटिका आर्य समाजों में श्रावणी के पर्व पर अर्थात् साप्ताहिक व पाक्षिक यज्ञों व वेद प्रवचनों का लाभ अवश्य उठाएं अतः हे आर्यों पर्वों के स्वरूप को संसार में फैलाओ और अपने आर्यत्व का परिचय दो यह बहुत ही पुण्य काम है क्योंकि महर्षि दयानन्द ने आर्य समाज के दस नियमों में एक नियम यह भी दिया है कि वेद का पढ़ना पढ़ाना और सुनना सुनाना सब आर्यों का परम धर्म है, तो आओ श्रावणी पर संकल्प लें वेद पढ़े पढ़ाए अगर न ही पढ़ सकते हो तो, सुने और अन्य को सुनाकर परम धर्म के भागी बनें।

-प्रेम भारद्वाज सम्पादक एवं सभा महामंत्री

www.thearyasamaj.org

यज्ञ क्यों करें ? यजुर्वेद

-ले० शिव नारायण उपाध्याय 73, शास्त्री नगर, दादाबाड़ी, कोटा

यजुर्वेद कर्म काण्ड का वेद हैं। विविध यज्ञों में इसी वेद के मंत्रों से आहुति दी जाती है। प्रथम अध्याय मंत्र 2 में ही यज्ञ की चर्चा है।

वसोः पवित्रमसि द्यौरसि पृथ्वियसि मातरिश्वानो धर्मोऽसि विश्वधाऽसि परमेण धाम्ना दृंहस्य मा ह्वार्मा ते यज्ञपति र्ह्वाषीत्।

यजु 1.2.

स्वामी दयानन्द इसके भावार्थ में लिखते हैं, 'मनुष्य लोग अपनी विद्या और उत्तम क्रिया से जिस यज्ञ का सेवन करते हैं, उससे पवित्रता का प्रकाश, पृथ्वी का राज्य, वायुरूपी प्राण के तुल्य राजनीति, प्रताप, सबकी रक्षा, इस लोक और परलोक में सुख की वृद्धि, परस्पर कोमलता से वर्तना और कुटिलता का त्याग इत्यादि श्रेष्ठ गुण उत्पन्न होते हैं इसलिए सब मनुष्यों को परोपकार तथा अपने सुख के लिए विद्या और पुरूषार्थ के साथ प्रीतिपूर्वक यज्ञ का अनुष्ठान नित्य करना चाहिए।'

इस एक मंत्र के भावार्थ में ही स्वामी दयानन्द सरस्वती ने यज्ञ से होने वाले कितने ही लाभों के विषय में बता दिया हैं

वसोः पवित्रमसि शतधारं वसोः पवित्रमसि सहस्त्र धारम्।

देवस्त्वासविता पुनातु वसोः पवित्रेण शतधारेणसुप्वाकामधुक्षः।

यजुर्वेद 1.3.

पदार्थ-जो (वसोः) यज्ञ (शतधारम्) असंख्यात संसार का धारण करने और (पवित्रम्) शुद्धि करने वाला कर्म (असि) है। जो (वसोः) यज्ञ (सहस्त्रधारम्) अनेक प्रकार के ब्रह्माण्ड को धारण करने और (पवित्रम्) शुद्धि का निमित्त सुख देने वाला (असि) है। (त्वा) उस यज्ञ को (देवः) स्वयं प्रकाश स्वरूप (सविता) वसु आदि तैंतीस देवों का उत्पत्ति करने वाला परमेश्वर (पुनातु) पवित्र करे। हे जगदीश्वर। आप हम लोगों से सेवित जो (वसो) यज्ञ है (पवित्रेण) शुद्धि के निमित्त वेद के विज्ञान (शतधारेण) बहुत विद्याओं का धारण करने वाले वेद और (सुप्वा) अच्छी प्रकार पवित्र करने वाले यज्ञ से हम लोगों को पवित्र कीजिये। हे विद्वान् पुरूष। तू (काम) वेद की श्रेष्ठ वाणियों में से किस किस वाणी के अभिप्राय को (अधुक्षः) अपने मन में पूर्ण करना चाहता है।

फिर यज्ञ से होने वाले लाभ पर मंत्र संख्या 12 में कहा गया है-

पवित्रेस्थो वैष्णव्यौ सवितुर्वः प्रसव उत्पुनाभ्यच्छिद्रेण पवित्रेण सूर्य्यस्य रश्मिभिः।

देवीरापोऽअग्रेगुवोऽअग्रेपुवोऽग्रऽइममद्ययज्ञं नयताग्रे यज्ञपति सुधातुं यज्ञपति देवयुवम्।

यजु. 1.12

भावार्थ-इस मंत्र में लुप्तोपमालंकार है। जो पदार्थ संयोग से विकार को प्राप्त होते हैं वे अग्नि के निमित्त से अति सूक्ष्म परमाणु रूप होकर वायु के बीच रहा करते हैं और कुछ शुद्ध भी हो जाते हैं परन्तु जैसी यज्ञ के अनुष्ठान से वायु और सृष्टि जल की उत्तम शुद्धि और पुष्टि होती है वैसी दूसरे उपाय से कभी नहीं हो सकती इससे विद्वानों को चाहिए कि वे अच्छी अच्छी सवारी बना कर अनेक प्रकार से लाभ उठावें।

फिर पन्द्रहवें मंत्र के भावार्थ में स्वामी दयानन्द सरस्वती लिखते हैं, 'जब मनुष्य वेदादि शास्त्रों द्वारा यज्ञ किया और उसका फल जान कर शुद्धि और उत्तमता के साथ यज्ञ को करते हैं तब वह सुगन्धि आदि पदार्थों के होम द्वारा परमाणु अर्थात् अति सूक्ष्म होकर वायु और वृष्टि जल में विस्तृत हुआ सब पदार्थों से उत्तम करके दिव्य सुखों को उत्पन्न करता है। जो मनुष्य सब प्राणियों के सुख के अर्थ पूर्वोक्त तीन प्रकार के यज्ञ को नित्य करता है उसको सब मनुष्य यज्ञ का विस्तार करने वाला उत्तम मनुष्य है ऐसा बारम्बार कहकर सम्मान करें।'

यजुर्वेद अध्याय दो मंत्र संख्या दो में कहा गया है-हे मनुष्यों। तुमको वेद आदि यज्ञ के साधनों का सम्पादन करके सब प्राणियों के सुख तथा परमेश्वर की प्रसन्नता के लिए अच्छी प्रकार क्रिया युक्त यज्ञ करना और सदा सत्य ही बोलना चाहिए। तुम लोगों को भी मेरे (ईश्वर के) समान पक्षपात छोड़कर सब प्राणियों के पालन से सुख सम्पादन करना चाहिए।

यजुर्वेद अध्याय दो मंत्र संख्या सोलह में यह बताया गया है कि यज्ञ की क्रिया का वायु मण्डल पर क्या प्रभाव होता है। स्वामी दयानन्द सरस्वती इस मंत्र की भूमिका में लिखते हैं-इस मंत्र में लुप्तोपमालङ्कार है। मनुष्य लोग यज्ञ में जो आहुति देते हैं वह वायु के साथ मेघ मण्डल में जाकर सूर्य से खिंचे हुए जल को शुद्ध करती है फिर वहाँ से वह जल पृथ्वी पर आकर ओषधियों को पुष्ट करता है। वह उक्त आहुति वेद मन्त्रों से ही करनी चाहिए क्योंकि उसके फल को जानने से श्रद्धा उत्पन्न होवे।'

कस्त्वा विमुञ्चति सत्वा विमुञ्चति कस्मै त्वा विमुञ्चति तस्मै त्वा विमुञ्चति।

पोषाय रक्षसा भागोसि।

यजु. 2.23.

पदार्थ-(कः) कौन सुख चाहने वाला यज्ञ का अनुष्ठाता पुरूष (त्वा) उस यज्ञ को (विमुञ्चति) छोड़ता है अर्थात् कोई नहीं। और जो कोई यज्ञ को छोड़ता है (त्वा) उसको (सः) यज्ञ का पालन करने वाला परमेश्वर भी (विमुञ्चति) छोड़ देता है। जो यज्ञ को करने वाला मनुष्य पदार्थ समूह को यज्ञ में छोड़ता है (त्वा) उसको (कस्मै) किस प्रयोजन के लिए अग्नि के बीच में (विमुञ्चति) छोड़ता है (तस्मै) जिससे सबको सुख प्राप्त हो तथा (पोषाय) पुष्टि आदि गुण के लिए (त्वा) उस पदार्थ समूह को (विमुञ्चति) छोड़ता है। जो पदार्थ सब के उपहार के लिए यज्ञ के बीच में नहीं मुक्त किया जाता वह (रक्षसाम्) दुष्ट प्राणियों का (भागः) अंश (असि) होता है।

यजुर्वेद अध्याय तीन मन्त्र पहला के भावार्थ में स्वामी दयानन्द लिखते हैं। जैसे गृहस्थ मनुष्य आसन, अन्न, जल, वस्त्र और प्रियवचन आदि से उत्तम गुण वाले सन्यासी आदि को सेवन करते हैं वैसे ही विद्वान लोगों को यज्ञ, वेदी, कला यंत्र और यानों में स्थापन कर यथा योग्य इन्धन, घी, जलादि से अग्नि को प्रज्वलित करके वायु, वर्षा जल की वृद्धि अथवा यानों की रचना नित्य करनी चाहिए।

स्वामी जी चाहते हैं कि मनुष्य विमानादि बनाना भी सीखें। यज्ञ का बड़ा लाभ वृष्टि का ठीक से होना भी है इसे यजुर्वेद अध्याय 23 मंत्र संख्या बारह में बताया गया है।

द्यौरसीत्पूर्व चित्तिरश्वऽआसीद् बृहद्यः।

अदिरासीत्पिलिप्पिला रात्रिरासीत्पिशङ्गिपा।

भावार्थ-हवन और सूर्य रूपादि अग्नि के ताप से सब गुणों से युक्त अन्नादि से संसार की स्थिति करने वाली वर्षा होती है। उस वर्षा से सब ओषधि आदि उत्तम पदार्थ युक्त पृथ्वी होती और सूर्य रूप अग्नि से ही प्राणियों के विश्राम के लिए रात्रि होती है।

यज्ञ में पशु की बलि देने की प्रक्रिया का यजुर्वेद समर्थन नहीं करता है। यजुर्वेद अध्याय 23 मंत्र संख्या 17 में इस विषय में नाना प्रकार से इस विषय पर कहा गया है-

अग्निः पशुरासीत्तेनायजन्त सऽएतं लोकमजयद्यस्मिन्नग्निः

स ते लोको भविष्यति तं जेष्यसि पिबैता ऽ अपः।

पदार्थ-हे विद्या बोध चाहने वाले पुरूष (अस्मिन्) जिस देखने योग्य लोक में (सः) वह (अग्निः) अग्नि (पशुः) देखने योग्य (आसीत्) है (तेन) उससे जिस प्रकार यज्ञ करने वाले (अयजन्त) यज्ञ करें उस प्रकार से तू यज्ञ कर जैसे (सः) वह विद्वान् (एतम्) इस (लोकम्) देखने योग्य स्थान को (अजयत्) जीतता है वैसे इसको जीत यदि (तत्) उसको (जैष्यसि) जीतेगा तो वह (अग्निः) अग्नि (ते) तेरा (लोकः) देखने योग्य (भविष्यसि) होगा इससे तू (एता) इस यज्ञ से शुद्ध किये हुए (अपः) जलों को (पिब) पी। इस मंत्र में अग्नि को ही पशु कहा गया है। वैसे ही यज्ञ को हिंसा रहित कहा जाता है। इति।

www.thearyasamaj.org

वेद अपौरुषेय एवं ईश्वरीय ज्ञान है

-ले० श्री हरिश्चन्द्र वर्मा 'वैदिक' मुरारई, ज़िला वीरभूम

जैसे सृष्टि के बीज रूपी परमाणुओं को किसी वैज्ञानिक ने उत्पन्न नहीं किया उसी प्रकार वेदों के बीजात्मक ज्ञान को किसी ऋषि ने उत्पन्न नहीं किया क्योंकि वह ईश्वरीय है, और उसकी ईश्वरीयता तभी सिद्ध हो सकती है जब उसे वेद सब सत्य विद्याओं की पुस्तक है को ध्यान में रखते हुए उसके मंत्रों का भाष्य आचार्य अग्निव्रत नैष्ठिक जैसा किया जाएगा।

हमारे आचार्य जी ने 'वैदिक सम्पदा' में लिखा हैं कि-''यह सृष्टि की सम्पूर्ण रचना जिसके ज्ञान से रची हुई है और संचालित है उसकी विविध स्थितियों के विविध तत्वों, राशियों और पिण्डों का ज्ञान कराने वाला वह शब्दमय मंत्र भी उसी जगद्रचयिता का ही है, जो इस मानव देह में हमारी ध्वनियों से प्रारम्भ हुआ। अत: जिन मानव ऋषियों के माध्यम से वह वेद ज्ञान, वर्ण या ध्वनि रूप में प्रकट हुआ। उसके रचयिता वे मानव देहधारी ऋषि स्वयं नहीं थे, वे तो उसके अभिव्यंजक प्रकटकर्त्ता, दूत या माध्यम मात्र ही थे। इसलिए कभी किसी ऋषि ने यह नहीं घोषित किया कि मैंने ऋग्वेद बनाया, मैंने यजुर्वेद बनाया या मैंने सामवेद बनाया। ऋषि मुख से तो यही ध्वनि प्रकट हुई कि-

'तस्माद्य ज्ञात्सर्वहुतऽऋच: सामानि जज्ञिरे। छन्दाथसि जज्ञिरे तस्माद यजुस्तत्माद जायत॥' (ऋ० 10, 90, 9) (यजु० 31, 7) (अथर्व० 19, 6, 13)

अर्थात्-उसी पूजनीय सर्वोपास्य परमात्मा से ऋग्वेद, यजुर्वेद, सामवेद और अथर्ववेद उत्पन्न हुए हैं।

किन्तु महाभारत युद्ध के पश्चात् मध्यकालीन के सायण जो मुसलमानी समय में हुआ था। उसके भाष्य में पौराणिक छाया थी और महीधर तान्त्रिक था, दोनों ने वेद-भाष्य करते समय निरुक्त का सहारा नहीं लिया, दोनों ने प्रचलित संस्कृत के नियमों से ही वेदार्थ किया। वेदों के शब्द यौगिक हैं और उनके वास्तविक अर्थ तभी प्राप्त हो सकते हैं, जब उन्हीं नियमों से उनका अर्थ किया जाता है। इन दोनों ने पाणिनी व्याकरण, निरुक्त तथा निघण्टु की उपेक्षा की। जिन मंत्रों का उपनिषद तथा ब्राह्मण ग्रन्थकारों ने अर्थ कर दिया था। उन अर्थों को भी उन्होंने अवज्ञाकर पौराणिक एवं तान्त्रिकों जैसा अर्थ किया। यथा-कहीं-कहीं अश्लीलता, लम्पता, मासांहार, गौ हत्या, मदिरापान, पशु-बलि, नर बलि आदि पाप दोषों से पूर्ण। इसके अलावा मैक्समूलर ने तो आर्यों की सभ्यता को नीचे गिराने में कोई कसर नहीं छोड़ी। वेद मंत्रों को गड़रियों का गाना और बहुदेववाद बताया, जिसका लाभ अंग्रेज़ इतिहासकारों ने उठाया।

अत: देशी-विदेशी दोनों भाष्यकारों ने इस विद्या की पुस्तक वेद को साधारण पुस्तकों की कोटि से भी गिरा दिया। उस समय लोगों ने सब सायण आदि के वेद भाष्य को ही सही मानने लगे। मंत्र का पूर्ण बोध न होने के कारण ज्ञानी लोग भी वेद विरुद्ध अन्ध परम्पराओं को ही सत्य मानकर विश्वास करने लगे।

(आर्यावर्त) भारत के किसी पठित ने यह साहस नहीं दिखाया कि सायण आदि के अर्थ को एक ओर रखकर वेदों का ठीक अर्थ करें। ब्राह्मण लोग भी विचार शक्ति से हीन थे, उन लोगों को वेदों से मतलब नहीं था। अपने पुराणों से मतलब था उसी के सब लकीर के फकीर बने हुए थे। किसी में योग्यता नहीं थी। ऐसे में जब ऋषि दयानन्द गुरु विरजानन्द की कुटिया में पहुंचे तब वेदों के व्याकरण अष्टाध्यायी, निघण्टु आदि का ज्ञान प्राप्त करने के पश्चात् ऋषि ने देखा कि वेदार्थ को समझने के लिए जो निरुक्त, निघण्टु तथा ब्राह्मण ग्रन्थ हैं-बिना उनके सायण, महीधर आदि ने वेदों के सही अर्थ समझने में बड़ी भूल की है। तब उस समय ऋषि दयानन्द ही ऐसे महापुरुष थे जो निर्भय होकर प्रबल स्वर में कहा वेदों का अनर्थ किया गया है। वेद विद्या की पुस्तक है, इसे सिद्ध करने के लिए उसके सत्यार्थ को सबके सामने रख दिया और सबकी आंखें खोल दी।

उसी प्रकार आज आचार्य अग्निव्रत नैष्ठिक ने जिन वेद मंत्रों का अश्लील गद्य भाष्य किया गया था उसी मंत्र को उन्होंने 'अधिदैविक, अधिभौतिक एवं आध्यात्मिक भाष्य करके सिद्ध कर दिया है कि वेदों के सभी मंत्र ईश्वरीय होने से विविध विद्याओं से युक्त हैं।'

आचार्य सायण का भाष्य

न सेशे यस्य रम्बतेऽन्तरा सक्थ्याऽकपृत्।

सेदीशेयस्य रोमशंनिषेदुषो-विजृम्भते विश्वस्मदन्द्र उत्तर:।

(ऋ० 10, 86, 16)

हे इन्द्र स जनो नेशेमैथुन कर्तुनेष्टेन शक्नोतियस्य जनस्य कपृच्छेप: सक्थ्या-सक्थिनी अन्तरा रंबते लम्बते। सेत स एव स्त्रीजन ईशे मैथुनं कर्तु शक्नोति यस्य जनस्य निषेदुष: शयान-स्यरोमशमुपस्थं विजृम्मते विवृतं भवति। यस्य च पतिरिद्रो विश्वस्मादुत्तर: ॥16॥

उनका यह भाष्य अश्लील होने से आचार्य अनिव्रत नैष्ठिक ने इसका हिन्दी अनुवाद करना उचित नहीं समझा।

उसी मंत्र का अधिदैविक भाष्य का जो आचार्य जी ने भावार्थ लिखा है उसी को मैंने लिखा है। लेख बढ़ जाने से उनके भाष्य को नहीं लिखा।

भावार्थ-जब सूर्य के केन्द्रीय भाग व बहिर्भाग को जोड़ने वाली दृढ़ स्तम्भरूपी उत्तरी व दक्षिणी प्राणधाराएं मन्द हो जाती हैं, तब सूर्य के दोनों में संतुलन खोकर सूर्य का अस्तित्व संकट ग्रस्त हो सकता है और जब वे दोनों धाराएं विशेष रूप से सक्रिय व सशक्त होती हैं, तब सूर्य का सन्तुलन उचित प्रकार से बना रहता है।

1. उसी मंत्र का 'आधिभौतिक' भाष्य का भावार्थ-राजा को चाहिए कि वह सम्पूर्ण राष्ट्र के लिए अनुकूल वचनों से युक्त होकर अपनी प्रजा के मध्य पनप रहे रागद्वेष जन्य असन्तोष एवं संघर्ष को दूर करने का सतत प्रयत्न करे, साथ ही अपने बल व धन का सम्पूर्ण प्रजा के हित में यथायोग्य नियोजन करे।

2. उसी मंत्र का केवल आध्यात्मिक भाष्य एवं भावार्थ लिख रहा हूं-(यस्य) जिस विद्वान् पुरुष का (कपृत्) मन एवं सुखकारी प्राणों का समूह (सक्थ्या अन्तरा) रागद्वेषादि द्वन्द्वों में आसक्ति एवं कोलाहल के मध्य (रम्बते) चिपकाया रहता है अर्थात् उन्हीं में रत रहता है (न स ईशे) वह अपनी इन्द्रियों पर शासन नहीं कर सकता, बल्कि (यस्य निषेदुष: रोमशम्) दृढ़ एवं ब्रह्मवर्चस से तेजस्वी होकर अपने अन्त: करण को प्रणव तथा गायत्रयादि छन्द रूप वेद की पवित्र ऋचाओं में प्रशस्त रूप से रमण करते हुए (विजृम्भते) स्वयं को परम पिता सुख स्वरूप परमेश्वर के आनन्द में विस्तृत कर देता है। (स इत् ईश) वही योगी पुरुष अपनी इन्द्रियों पर शासन कर पाता है। (विश्वस्मादिन्द्र उत्तर:) ऐसा जितेन्द्रिय विद्वान अन्य प्राणियों में सबसे श्रेष्ठ होता है। (विश्वस्मादिन्द्र उत्तर:) ऐसा जितेन्द्रिय विद्वान् अन्य प्राणियों में सबसे श्रेष्ठ होता है।

(भाष्य, ऋ० 10, 86, 16)

भावार्थ-विद्वान् पुरुष को चाहिए कि अपने को योगयुक्त करके परमपिता परमात्मा से रमण करने के लिए अपने अन्त: करण को रागद्वेषादि द्वन्द्वों से हटाकर प्रणव तथा गायत्र्यादि ऋचाओं के विधिपूर्वक जप द्वारा परमेश्वर की उपासना करने हेतु अपनी इन्द्रियों पर जय प्राप्त करे।

तात्पर्य है कि वैदिक संस्कृत का बहुत बड़ा विद्वान् ही वेदों का सही भाष्य कर सकता है और जब तक वेदों के मंत्रों का उत्तम भाष्य नहीं होगा तब तक उसकी ईश्वरीयता सिद्ध नहीं हो सकता।

जिन-जिन वेद मंत्रों का सायण, महीधर, उब्बट और मैक्समूलर तथा कतिपय पण्डितों ने अश्लील-गंदा, पशुबलि, मांसाहार, गो हत्या, मद्यपान, तस्कर, बहुदेवबाद एवं जादू टोना आदि जैसा भाष्य ऋषि दयानन्द के सिद्धान्त विरुद्ध किया गया है। उन सबका संशोधन उसी प्रकार होना चाहिए जिस प्रकार 'वेद विज्ञाना चार्य' अग्निव्रत नैष्ठिक चाहते हैं।

www.thearyasamaj.org

आर्य समाज मेरी जीवनधारा

श्री सुरेन्द्र मोहन तेजपाल जी सभामंत्री से श्री डाक्टर देवेन्द्र जी से आर्य समाज सम्बन्धी वार्तालाप जो पाठकों की जानकारी के लिए दिया जा रहा है। आशा है पाठक इस वार्तालाप से लाभान्वित होंगे।

-सम्पादक

(गतांक से आगे)

नहीं! क्या बात है ?

पंडित जी-उन्होंने ऋषि जी की विचारधारा के विषय में कमाल की एक टिप्पणी की है ''स्वामी जी के जिन विचारों को हमारे पूर्वजों ने स्वीकार नहीं किया, उन्हीं को हमें स्वीकार करना पड़ा जो विचार हम स्वीकार नहीं कर रहे, उन्हीं को हमारी आने वाली पीढ़ी को स्वीकार करना पड़ेगा।''

इससे पूर्व कि मैं आर्य समाज से सम्बन्धित कतिपय सैद्धान्तिक प्रश्न करूं, एक और निजी प्रश्न क्या आप आर्य समाज के विभिन्न पदों पर रह कर संतुष्ट हों ?

पंडित जी-मैंने आर्य समाज के विभिन्न पदों पर रहते हुए यह प्रयास किया है कि आर्य समाज को नवांशहर की सीमा से बाहर ले जाऊं।

कैसे ?

पंडित जी-जैसे कि आपको विदित ही है कि आर्य समाज द्वारा अनेक बार मैडिकल तथा खूनदान शिविरों का आयोजन किया गया। हर बार अलग-अलग रोगों के कैंप लगाए गए तथा उनमें विशेषज्ञ डाक्टरों को बुलाया गया। आर्य समाज के विचारों को जन साधारण तक पहुंचाने के लिए सैमीनार, भाषण-प्रतियोगिता, कवितोच्चारण प्रतियोगिता, सामाजिक कुरीतियों के विरुद्ध नाट्य-मंचन, चित्रकारी आदि प्रतियोगिताएं भी आयोजित की गईं। आर्य समाज द्वारा की जाने वाली सेवा कार्यों में सदा गरीबों को सर्वोपरि रखा जाता है। जैसे-निर्धनों तथा ज़रूरतमंदों को गर्म-कपड़ों का वितरण, गरीब लड़कियों की शादियां करवाना, निःशुल्क शिक्षा का प्रबन्ध करना। प्रत्येक वर्ष वेद प्रचार हेतु नगर के विभिन्न गली-मुहल्लों में निरन्तर आठ दिन हवन-यज्ञों का आयोजन करना तथा लोगों में वैदिक साहित्य वितरण करना। इस प्रकार आर्य समाज नवांशहर की पहुंच विस्तृत क्षेत्र में फैल गई। मैं कह सकता हूं कि आज आर्य समाज नवांशहर केवल आर्य समाज मन्दिर की यज्ञशाला तक ही सीमित नहीं है। आपका दूसरा प्रश्न क्या है ?

आपकी संतुष्टि बारे ?

पंडित जी-हां, मैं इसे इस प्रकार से देखता हूं कि मैंने अपनी ओर से हर पद पर ईमानदारी से काम किया है। इसमें मैं कितना सफल रहा हूं, इसका निर्णय तो आर्य समाज नवांशहर ने द्वारा किया जाना है। हां, यह बात मैं निश्चित रूप से कह सकता हूं कि बिना किसी राजनैतिक पृष्ठ-भूमि और समर्थन के एक बार मैं सेवा मुक्त होने के पश्चात् नगर परिषद् के चुनाव में प्रत्याशी के रूप में खड़ा हो गया। जिस प्रकार मैं विजयी हुआ मैं समझता हू यह विजय आर्य समाज मंच पर मेरी ओर से की गई सेवा का ही प्रतिफल था।

आओ! अब उस ओर ओ३म् जिसके लिए आपको कष्ट दिया है मुझमें आर्य समाज के बारे में जानने की जिज्ञासा है। ये वही प्रश्न हो सकते हैं जो जन साधारण में आर्य समाज के प्रति शंका का कारण है। कहा जाता है कि आर्य लोग बाहर से आकर भारत में बसे हुए हैं। वे यहां के मूल निवासी नहीं है। आपका इस बारे में क्या कहना है ?

पंडित जी-यह भ्रमित करने वाला प्रचार है। इस देश का पुरातन नाम आर्यावर्त था। इससे पूर्व देश का कोई नाम नहीं था। यहां कोई रहता भी नहीं था, अर्थात् आर्यों से पूर्व यहां कोई नहीं रहता था। केवल आर्य लोग ही यहां के मूल निवासी हैं। सत्यार्थ प्रकाश का आठवां समुल्लास पढ़ें, सब स्पष्ट हो जाएगा।

जन साधारण की यह धारणा है कि आर्य समाज हिन्दुओं की एक साम्प्रदायिक संस्था है। यह कथन सत्य के कितने निकट है ?

पंडित जी-डॉ० साहिब इस कथन में तनिक भी सत्यता नहीं। यदि आपको यह आम धारणा लगती है तो यह अज्ञानतावश बनी हो सकती है। यह निरा झूठ है। कोरा झूठ है।

फिर सत्य क्या है ?

पंडित जी-आर्य समाज श्रेष्ठ लोगों का एक संगठन है और श्रेष्ठता की परख उसके गुण, कर्म, स्वभाव से होती है। जो लोग आर्य समाज की ऐतिहासिक पृष्ठ भूमि से परिचित नहीं हैं वे ही ऐसी निरर्थक बातें कर सकते हैं। यदि उन्हें यह विदित होता कि आर्य समाज की स्थापना महर्षि दयानन्द जी ने 10 अप्रैल, 1875 को एक पारसी सज्जन डा० मानक जी अंदेर के उपवन में बंबई में की थी, तो वे ऐसी बातें न करते। यदि वे यह जानते होते कि पहले आर्य समाज मंदिर के निर्माण हेतु एक मुसलमान अल्ला रक्खा खां ने 5000 रुपए की राशि दान में दी थी, तो वे ऐसी बातें न करते। इसके अतिरिक्त महर्षि दयानन्द के अनुयायी स्वामी श्रद्धानन्द जी ने जामा मस्जिद के मैंबर से ऋग्वेद के मंत्रों से अपना भाषण आरम्भ किया था और ओ३म् शान्ति, शान्ति, शान्ति उच्चारण करके समाप्त किया था। इसके अतिरिक्त (किसी नाम से याद करने हेतु कुछ रुकते हैं) काकोरी कांड के मुख्य नायक का भला क्या नाम था ?

शहीद राम प्रसाद बिस्मिल।

पंडित जी-हां....बिस्मिल का साथी अशफाक उल्ला खां अपने साथियों सहित क्रांति का पाठ सीखने के लिए आर्य समाज मंदिर में अक्सर ठहरता था। शहीद भगत सिंह के परिवार के बारे में तो सारी दुनिया जानती है कि दादा अर्जुन सिंह, पिता किशन सिंह, चाचा अजीत सिंह तथा स्वर्ण सिंह सब आर्य समाजी थे। सरदार अर्जुन सिंह जी की तो महर्षि दयानन्द जी से दो बार भेंट भी हुई थी। मैं यह भी बताना चाहूंगा कि सरदार भगत सिंह ने अपने चाचा अजीत सिंह की भांति पंडित लोकनाथ तर्क वाचस्पति से यज्ञोपवीत तथा गायत्री मंत्र की विधिपूर्वक दीक्षा ली थी। नवांशहर के तत्कालीन आर्य समाजियों के कथनानुसार सरदार किशन सिंह स्थानीय आर्य समाज मंदिर नवांशहर के साप्ताहिक सत्संग में भी सम्मिलित होते रहते थे।

इस प्रकार आर्य समाज को हिन्दुओं की साम्प्रदायिक संस्था कहने की धारणा न केवल गलत है अपितु यह अन्यायपूर्ण भी है। मेरे मतानुसार आर्य समाज को भारतीय समाज का एक प्रगतिशील अंग कहा जाए तो उचित होगा।

आर्य समाज के बारे में एक और धारणा है। हिन्दुओं का एक बड़ा वर्ग यह मानता है कि आर्य समाज भगवान राम तथा कृष्ण को मान्यता नहीं देता। इस धारणा में कितनी सच्चाई है ?

पंडित जी-यह धारणा भी निराधार एवं गलत है। आर्य समाज मर्यादा पुरुषोत्तम श्री राम तथा योगेश्वर श्री कृष्ण को भारतीय संस्कृति का प्रतीक मानता है। हमारी संस्कृति इन दो महापुरुषों के इर्द-गिर्द घूमती है। इसका कारण यह है कि इन्होंने भारतीय जन-मानस को बहुत प्रभावित किया है। श्री राम पग-पग पर मर्यादा समझाते हैं तथा उसका पालन आचरण करने की शिक्षा देते हैं तथा श्री कृष्ण जी की जीवनी व उपदेशों को मनुष्य जीवन में नए कीर्तिमान स्थापित करते देख रहा है।

जो हिन्दू आर्य समाज को जाने बिना ऐसी टिप्पणी करता है, मैं उसे परामर्श दूंगा कि सत्यार्थ प्रकाश का ग्यारहवां समुल्लास पढ़े। दयानन्द जी ने श्री कृष्ण के विषय में लिखा है-''योगिराज श्री कृष्ण का इतिहास अति उत्तम है। उनके गुण, स्वभाव, कर्म एवं चरित्र आप्त-पुरुषों के सदृश्य है। जो पूर्ण विद्वान्, धर्मात्मा, परोपकारी, प्रिय सत्यवादी, पुरुषार्थी, जितेन्द्रीय, कल्याण, उपदेष्टा हो वही आप्त-पुरुष कहलाता है।'' (पंडित जी ने 'सत्यार्थ प्रकाश' से पढ़कर (सुनाया) अब आप ही बताएं डॉ० साहब कि आर्य समाज उन महापुरुषों को मान्यता देता है या नहीं?

मैं आर्य समाज के अनेक कार्यक्रमों में सम्मिलित हुआ हूं। आप ''एक पिता एकस के हम वारिक'' का प्रचार करते हो। यह तो गुरु नानक देव जी का दर्शन हैं। आप भी इस पर बल देते हो, क्यों ?

पंडित जी-वास्तव में सिख मत तथा आर्य समाज में बहुत सी बातों में समानता है। जैसे-दोनों एक ओंकार के उपासक हैं, दोनों परमात्मा के निर्गुण स्वरूप को मानते हैं, दोनों मूर्ति पूजा के विरोधी हैं, छुआ-छूत, जात-पात, रंग-भेद के विरोधी हैं। मरघट-शमशान, बुद्धि कर्मकाण्ड, वहम-भ्रम, फलित-ज्योतिष आदि में विश्वास नहीं रखते। महर्षि दयानन्द जी ने जहां बाकी नशों के विरुद्ध आवाज़ उठाई वहीं विशेष रूप में तंबाकू के सेवन को वर्जित कहा है। दोनों नारी-स्वतन्त्रता, नारी-शिक्षा व नारी को समाज में सम्मान देने के समर्थक हैं। दोनों ही विधवा विवाह के समर्थक हैं, इत्यादि....इसके अतिरिक्त और भी अनेक समानताएं हैं। 'एक पिता एकस के हम बारिक' तो आर्य समाज के मुख्य सिद्धान्तों में एक हैं। **(क्रमशः)**

www.thearyasamaj.org

अन्तिम शोक सभा सम्पन्न

महर्षि दयानन्द मठ (वेद मन्दिर) ढन्न मुहल्ला जालन्धर के महामंत्री श्री यशपाल जी आर्य का 2-8-2013 को 70 वर्ष की आयु में हो गया था। उनकी आत्मिक शांति के लिए अन्तिम शोक सभा का आयोजन दिनांक 5-8-2013 को महर्षि दयानन्द मठ में किया गया। श्री यशपाल जी आर्य एक समर्पित आर्य समाजी तथा कर्मठ कार्यकर्त्ता थे। वे निरन्तर 40 वर्षों से मठ से जुड़े हुए थे। श्री यशपाल जी कर्मठ कार्यकर्त्ता होने के साथ-साथ वेदों के विद्वान तथा भजनोपदेशक भी थे। उनके द्वारा लिखी गई रचनाएं आर्य समाजों में गाई जाती हैं। अन्तिम शोक सभा का आरम्भ दिवंगत आत्मा की शांति के लिए प्रार्थना करते हुए ईश्वर स्तुति प्रार्थना उपासना के मंत्रों द्वारा किया गया। इसके पश्चात श्री राजेश प्रेमी जी ने सुन्दर भजनों के द्वारा अपनी श्रद्धांजलि अर्पित की। प्रेमी जी ने श्री यशपाल जी की रचना **'कितनी सुंदर तेरी रचना, तू कितना सुंदर होगा। प्यासी अखियां मेरी भगवन, कब तेरा दर्शन होगा'** सुनाकर सबको भावुक कर दिया। श्री सुरेश कुमार शास्त्री जी ने उनके जीवन पर प्रकाश डालते हुए कहा कि श्री यशपाल जी एक कर्मठ कार्यकर्त्ता होने के साथ-साथ ईश्वर भक्त भी थे। अन्तिम समय तक परमात्मा का नाम लेते हुए उन्होंने अपने शरीर का त्याग किया। बीमार होने के बावजूद भी उन्होंने मठ को कभी नहीं छोड़ा। वे निरन्तर मठ में आते रहे। दोआबा कॉलेज के प्रिंसिपल श्री डा. नरेश कुमार जी धीमान ने श्रद्धांजलि देते हुए कहा कि श्री यशपाल जी धार्मिक प्रवृति के इन्सान थे। उन्होंने जो ज्ञान प्राप्त किया वह स्वाध्याय के बल पर हासिल किया। उन्होंने संस्कृत का अध्ययन नहीं किया परन्तु फिर भी वे अपने स्वाध्याय के बल पर वेदों के ऊपर प्रवचन करते थे। श्री सतीश कपूर व श्री ललित गुप्ता जी ने भी अपनी-अपनी श्रद्धांजलि भेंट की। मठ के प्रधान श्री कुन्दन लाल जी अग्रवाल ने अपनी श्रद्धांजलि भेंट करते हुए कहा कि श्री यशपाल जी के चले जाने से मठ को जो क्षति हुई है उसे पूरा नहीं किया जा सकता। उन्होंने मठ की तरक्की के लिए जो कार्य किए हैं, इसके लिए मठ उनका हमेशा ऋणी रहेगा। श्री ओम प्रकाश जी अग्रवाल जी ने अपनी श्रद्धांजलि देते हुए कहा कि श्री यशपाल जी एक विनम्र, मधुरभाषी तथा बेहद सरल प्रवृत्ति के इन्सान थे, उनके मुख पर हमेशा मुस्कान रहती थी। उनके अकस्मात् चले जाने से हम सभी दुखी हैं। प्रिंसिपल श्री अश्विनी कुमार जी ने अपनी श्रद्धांजलि देते हुए सभी का धन्यवाद हुए कहा कि हम सभी दुख की इस घड़ी में शोक संतप्त परिवार के साथ हैं। इससे पूर्व प्रातः 9:00 बजे उनके निवास स्थान किशनपुरा में हवन यज्ञ का आयोजन किया गया जिसे श्री सुरेश कुमार शास्त्री तथा श्री संदीप शास्त्री जी ने सम्पन्न करवाया। इस अवसर पर श्री रवि मित्तल, प्रकाश चन्द्र सुनेजा, सत्यशरण गुप्ता, कैलाश अग्रवाल, ओम प्रकाश अग्रवाल आदि उपस्थित थे।

चुनाव सूचना

आर्य समाज हरी नगर नई दिल्ली-64 का वार्षिक चुनाव दिनांक 28 जुलाई 2013 को श्री देवराज आर्य मित्र जी की अध्यक्षता में हुआ। श्रीमती राजेश्वरी आर्या को सर्व सम्मति से प्रधान चुना गया। उनको अपनी कार्यकारिणी गठित करने का अधिकार दिया गया। श्री श्रीपाल आर्य जी को मन्त्री नियुक्त किया गया। शेष कार्यकारिणी बाद में बनाई जाएगी।

-श्रीपाल आर्य मन्त्री आर्य समाज, दिल्ली

पृष्ठ 1 का शेष- मानव निर्माण.....

समाज शब्द सम उपसर्ग पूर्वक् अज् धातु से बनता है। जिसका अर्थ गति करना है सम् का अर्थ मिलना है अत: समाज का अर्थ मिलकर गति करना है। वैसे अज् धातु का अर्थ अज गति क्षपणयो: गति के भी तीन अर्थ होते हैं ज्ञान, गमन, प्राप्ति इसलिए समाज का अर्थ भी बहुत विशाल हो सकता है। इस प्रकार दोनों शब्द मिला कर आर्य समाज शब्द बनता है। जिसकी पहली शिक्षा यह है कि सब लोग धर्मात्मा हों, सदाचारी हों और न्याय के मार्ग पर चलने वाले हों। आर्य समाज का अर्थ हैं, श्रेष्ठ, धार्मिक, सदाचारी, सात्विक लोगों का समूह। आर्य समाज के दस नियमों में सम्पूर्ण मानव के निर्माण का संदेश दिया है। वे दस नियम इस प्रकार हैं-

१. सब सत्य विद्या और जो पदार्थ विद्या से जाने जाते हैं उन सबका आदि मूल परमेश्वर है।

२. ईश्वर सच्चिदानन्द स्वरूप निराकार, सर्वशक्तिमान, न्यायकारी, दयालु, अजन्मा, अनन्त, निर्विकार, अनादि, अनुपम, सर्वाधार, सर्वेश्वर, सर्वव्यापक, सर्वान्तर्यामी, अजर, अमर, अभय, नित्य, पवित्र और सृष्टिकर्त्ता है, उसी की उपासना करनी योग्य है।

३. वेद सब सत्य विद्याओं का पुस्तक है। वेद का पढ़ना पढ़ाना और सुनना सुनना सब आर्यों का परम धर्म है।

४. सत्य के ग्रहण करने और असत्य के छोड़ने में सर्वदा उद्यत रहना चाहिए।

५. सब काम धर्मानुसार अर्थात् सत्य और असत्य को विचार करके करना चाहिए।

६. संसार का उपकार करना इस समाज का मुख्य उद्देश्य है अर्थात् शारीरिक, आत्मिक और सामाजिक उन्नति करना।

७. सबसे प्रीतिपूर्वक धर्मानुसार यथायोग्य वर्तना चाहिए।

८. अविद्या का नाश और विद्या की वृद्धि करनी चाहिए।

९. प्रत्येक को अपनी ही उन्नति में सन्तुष्ट न रहना चाहिए। किन्तु सबकी उन्नति में अपनी उन्नति समझनी चाहिए।

१०. सब मनुष्यों को सामाजिक सर्वहितकारी नियम पालने में परतन्त्र रहना चाहिए और प्रत्येक हितकारी नियम में सब स्वतन्त्र रहें।

मेरे विचार से मानव निर्माण के लिए जो बातें आवश्यक हैं, वह सब इन दस नियमों में निहित हैं। इन नियमों से ऐसा प्रतीत होता है कि महर्षि ने मानव निर्माण का पूरा-पूरा चित्र खींचकर रख दिया है। हम भी श्रेष्ठ मानव का निर्माण करने में सहायक हो यही महर्षि दयानन्द जी हमें आर्य समाज के द्वारा उपदेश दे रहे हैं। यदि आप सच्चे मानवों का निर्माण करना चाहते हैं तो आर्य समाज के उद्देश्यों को समझने का यत्न करें।

आर्य समाज जवाहर नगर लुधियाना में विशेष सत्संग

आर्य समाज जवाहर नगर लुधियाना में 4 अगस्त 2013 रविवार सायं 4.30 से 6.30 बजे तक श्रावणी पर्व के उपलक्ष्य में एक विशेष सत्संग का आयोजन किया गया। सर्वप्रथम आर्य समाज के पुरोहित पंडित बाल कृष्ण शास्त्री जी ने यज्ञ सम्पन्न करवाया। यज्ञ के बाद श्रीमती बॉबी शर्मा, अनु गुप्ता, मीरा सरीन, कुमारी मोनिका, श्री अनिल कुमार व विजय सरीन के मनोहर भजन हुए। भजनों के पश्चात आर्य जगत के प्रसिद्ध विद्वान आचार्य श्री राजू जी वैज्ञानिक का प्रवचन हुआ। सत्यार्थ प्रकाश के नवम समुल्लास के आधार पर अपने वक्तव्य में उन्होंने बताया कि दुखों से छूटना और पूर्ण सुख को प्राप्त करना मनुष्य जीवन का लक्ष्य है। इसके लिए उसे सत्संग करना चाहिए। जहां ईश्वर, जीव और प्रकृति का सही चिंतन होता है वही सत्संग है। मनुष्य को चाहिए कि वह प्राकृतिक साधनों का सदुपयोग करें और अपने मन को एकाग्र कर परमपिता परमात्मा की उपासना करे ताकि वह अपने लक्ष्य तथा मुक्ति को प्राप्त कर सके। आर्य समाज के प्रधान श्री विजय सरीन जी ने सभी का धन्यवाद किया। आर्य समाज के महामंत्री श्री अनिल कुमार जी ने मंच का संचालन किया। लुधियाना की भिन्न-भिन्न आर्य समाजों के अधिकारी व सदस्यों तथा अन्य महानुभावों ने इस कार्यक्रम में सम्मिलित होकर धर्म लाभ उठाया।

www.thearyasamaj.org

 रजि. नं. पी.बी./जे.एल–/0011/2012-14 RNI No. 26281/74

वेद वाणी

यस्मादृते न सिध्यति यज्ञो विपश्चितश्चन।
स धीनां योगमिन्वति।। -ऋ० १।१८।७

विनय हम में से बहुत-से लोगों को अपनी अक्ल का-अपनी बुद्धि का-बहुत अधिक अभिमान होता है। वे समझते हैं कि वे अपनी अक्ल व चतुराई के बल पर हर एक कार्य में सिद्धि पा लेंगे। उन्हें अपने बुद्धि-बल के सामने कुछ भी दु:साध्य नहीं दीखता। पर उन्हें यह मालूम नहीं कि बहुत बार उन्हें जिन कार्यों में सफलता मिलती है वह इसलिए मिलती है कि अचानक उस विषय में उनकी समझ (बुद्धि) प्रभु के बुद्धियोग के अनुकूल होती है। असल में तो इस जगत् का एक-एक छोटा-बड़ा कार्य उस प्रभु के योगबल (बुद्धियोग) द्वारा सिद्ध हो रहा है। हम मनुष्यों की बुद्धि जब प्रभु के बुद्धियोग के अनुकूल (जान-बूझकर अनुकूल होती है या अचानक) होती है, तब हमें दीखता है कि हमारी बुद्धि से किया कार्य सफल हो गया। पर अचानक हुई अनुकूलता के कारण जो हमें अपनी सफलता का अभिमान हो जाता है वह सर्वथा मिथ्या होता है। वह हमें केवल धोखे में रखने का कारण बनता है, और कुछ नहीं। पर जो जान-बूझकर प्राप्त की गई अनुकूलता होती है वही सच्ची है। यदि मनुष्य अपने कार्यों की सिद्धि चाहता है-अपने कार्यों को सफल-यज्ञ बनाना चाहता है, तो उसे यत्नपूर्वक अपनी बुद्धि को प्रभु से मिलाना चाहिये, अपनी बुद्धि का प्रभु में योग करना चाहिये। हमारी बुद्धि प्रभु से युक्त हो गई है-उसकी बुद्धि से जुड़ गई है कि नहीं-यह पूरी तरह से निर्णीत कर लेना तो हम अल्पज्ञ पुरुषों के लिए सदा संभव नहीं होता। हमारे लिए तो इतना ही पर्याप्त है कि हम युक्त करने का यत्न करते जाएं। प्रभु सत्यमय हैं, अत: हमारी बुद्धि सदा सत्य और न्याय के अनुकूल ही रहे (हमारे ज्ञान में जो कुछ सत्य और न्याय है, बुद्धि उसके विपरीत ज़रा भी निर्णय न करे) यह यत्न करना ही पर्याप्त है। हमारी बुद्धि के प्रभु से योग करने का यत्न जब परिपूर्ण हो जाता है अर्थात् इस योग में प्रभु व्याप्त हो जाते हैं, तभी वह कार्य सिद्ध हो जाता है। अत: हमें अपनी बुद्धियों का अभिमान छोड़कर, हमारे यज्ञ-कार्य में जो बड़े प्रसिद्ध अक्लमन्द लोग हैं उनके बुद्धिबल पर भरोसा करना छोड़कर, नम्र होकर, अपनी बुद्धियों को सत्य और न्याय-तत्पर बनाकर प्रभु से जोड़ने का यत्न करना चाहिये। हम चाहे कितने बुद्धिमान् हों, पर हमें सदा अपनी बुद्धि प्रभु से जोड़कर रखनी चाहिये। प्रभु के अधिष्ठान के बिना कोई भी यज्ञ-कार्य सफल नहीं हो सकता। -साभार वैदिक विनय प्रस्तुति श्री रणजीत आर्य

ईश्वर की प्राप्ति

भगवान महावीर अपने उपदेश में अहंकार से दूर रहने, आपस में समानता की भावना रखने एवं किसी को भी छोटा या नीचा न समझने की प्रेरणा दिया करते थे। एक बार उन्होंने अपने प्रवचन में कहा-"हम प्रत्येक व्यक्ति के गुणों से शिक्षा लेते हैं, क्योंकि प्रत्येक व्यक्ति में कोई न कोई अच्छाई अवश्य होती है। परन्तु यह तभी संभव होगा, जब हम किसी को अपने से तुच्छ मानने की भावना त्याग दें।" एक दिन महावीर अपने शिष्यों के साथ कहीं जा रहे थे। मार्ग में एक ग्रामीण मिला। उसने उन्हें देखते ही अत्यन्त श्रद्धापूर्वक झुक कर चरणों में प्रणाम किया। महावीर ने उसके हृदय की असीम श्रद्धा को भांप लिया। उन्होंने भी उस निश्छल, भोले-भाले ग्रामीण किसान के चरणों की ओर हाथ बढ़ा दिए। यह देखकर सभी दंग थे कि भगवान आज यह क्या कर रहे हैं ? ग्रामीण विनम्रता से बोला-"भगवन! आज आपने मुझ जैसे साधारण व्यक्ति के पैरों की ओर झुक कर मुझे पाप का भागी क्यों बना डाला ?" महावीर बोले-"तुम्हारे हृदय में अनूठी श्रद्धा भावना को परख कर मैं अपने को रोक नहीं पाया। मैंने तुम्हारे शरीर को नहीं, एक श्रद्धा-सम्पन्न आत्मा को नमन किया है। मेरे तप की अपेक्षा तुम्हारे भीतर छिपा श्रद्धारूपी सत्य कहीं अधिक महान है।"

सत्य है यदि हम अपने नेत्रों का सदुपयोग करते हुए व्यक्ति मात्र के हृदय में छिपे उस ईश्वर का साक्षात्कार कर लें तो हमें किसी भी कर्मकाण्ड अथवा तीर्थ स्थान में उसे खोजने की आवश्यकता ही नहीं रह जाती। एक सरल हृदय वाला विनम्र व्यक्ति ही उसे सरलता से पा सकता है। श्रद्धा को न तो शाब्दिक आवरण की आवश्यकता रहती है और न ही सुनिश्चित विद्वतापूर्ण वक्तव्यों की। स्वयं के साथ-साथ सबको उस एक ईश्वर की कृति मान लो और उसी में ईश्वर का परम सत्य जान लो; यही मानव जीवन का गूढ़ रहस्य है और यही जीवन का सार भी है।

-डा० (श्रीमती) अनु शर्मा कौल, आर्य समाज माडल टाऊन लुधियाना

गुरुकुल का आयुर्वेद महान
घर-घर में मिले रोगों से निदान

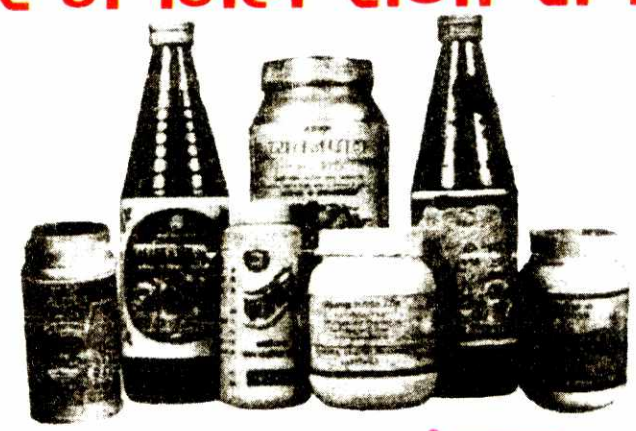

गुरुकुल च्यवनप्राश
सभी के लिए स्वादिष्ट, रुचिकर, पौष्टिक रसायन।

गुरुकुल पायोकिल
पायोरिया की आयुर्वेदिक औषधि
दांतों में खून रोके, मुंह की दुर्गन्ध दूर करे, मसूड़ों के रोग, ढीले दांत ठीक करे।

गुरुकुल शतशिलाजीत सूर्यतापी
पुष्टीदायक, बलवर्धक
शरीर में नया खून और उत्साह का अनुभव

गुरुकुल ब्राह्मी रसायन
बुद्धिवर्धक, स्फूर्तिदायक, दिमागी कमजोरी दूर करे।

गुरुकुल मधुमेह नाशिनी गुटिका
मधुमेह एवं प्रत्येक प्रकार के प्रमेह में लाभदायक

गुरुकुल मधु
गुणवत्ता एवं ताज़गी के लिए

गुरुकुल चाय
खाँसी, जुकाम, इन्फ्लूएंजा व थकान में अत्यंत उपयोगी।

अन्य प्रमुख उत्पाद
गुरुकुल द्राक्षारिष्ठ
गुरुकुल रक्तशोधक
गुरुकुल अश्वगंधारिष्ट

गुरुकुल कांगड़ी फार्मेसी, हरिद्वार डाकघर : गुरुकुल कांगड़ी-249404, ज़िला-हरिद्वार (उत्तरांचल) फोन : 0134-416073

शाखा कार्यालय : 63, गली राजा केदार नाथ, चावड़ी बाज़ार, दिल्ली-6, फोन : 23261871

श्री प्रेम भारद्वाज महामन्त्री, सम्पादक, प्रकाशक, मुद्रक द्वारा आर. के. प्रिंटर्स प्रैस, टाण्डा फाटक जालन्धर से मुद्रित होकर आर्य मर्यादा कार्यालय, गुरुदत्त भवन, चौक किशनपुरा, जालन्धर से इसकी स्वामिनी आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के लिए प्रकाशित हुआ। E-mail: apspunjab2010@gmail.com
आर्य मर्यादा में प्रकाशित सारी लेखन सामग्री से सम्पादक का सहमत होना आवश्यक नहीं। प्रत्येक विवाद के लिए न्याय क्षेत्र जालन्धर होगा।